Namaz Padhne Ke
Baa Wujood Gunah Kyun Ho Jaate Hain ? (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 277
Weekly Booklet : 277

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "फ़ैज़ाने नमाज़" की एक क़िस्त बनाम

नमाज़ पढ़ने के बा वुजूद गुनाह क्यूं हो जाते हैं ?

सफ़हात 21

नमाज़ की बा'ज़ ग़ल्तियों की निशान देही 03
रिज़्क़ में तंगी का ख़तरा 10
कौन सी नमाज़ मुंह पर मार दी जाती है ? 09
जिन के सदक़े बलाएं दूर होती हैं 17

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला	:	**नमाज़ पढ़ने के बा वुजूद गुनाह क्यूं हो जाते हैं ?**
सिने त़बाअ़त	:	जुमादल ऊला **1444** हि., दिसेम्बर **2022** ई.
ता'दाद	:	000
नाशिर	:	**मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

नमाज़ पढ़ने के बा वुजूद गुनाह क्यूं हो जाते हैं ?

येह रिसाला (**नमाज़ पढ़ने के बा वुजूद गुनाह क्यूं हो जाते हैं ?**) शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E Mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद -1, गुजरात
MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़मून "फ़ैज़ाने नमाज़" सफ़ह़ा 39 ता 55 से लिया गया है।

नमाज़ पढ़ने के बा वुजूद गुनाह क्यूं हो जाते हैं ?

दुआए जा नशीने अमीरे अहले सुन्नत या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 19 सफ़ह़ात का रिसाला : **"नमाज़ पढ़ने के बा वुजूद गुनाह क्यूं हो जाते हैं ?"** पढ़ या सुन ले उसे मुख़्लिस नमाज़ी बना कर हर गुनाह से बचा और उसे जन्नतुल फ़िरदोस में अपने प्यारे प्यारे सब से आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोसी बना। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने दिन और रात में मेरी त़रफ़ शौक़ व मह़ब्बत की वज्ह से तीन तीन मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और उस रात के गुनाह वख़्श दे। (معجم کبیر، 18/362، حدیث:928)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

नमाज़ बुराइयों से रोकती है

अल्लाह पाक पारह 21 **सूरतुल अ़न्कबूत** आयत 45 में इर्शाद फ़रमाता है : ﴿اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ط﴾ **"तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक नमाज़ मन्अ़ करती है बे ह़याई और बुरी बात से।"

नमाज़ पढ़ने के बा वुजूद गुनाह क्यूं हो जाते हैं ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** पाक का फ़रमाने आ़लीशान बिला शको शुबा ह़क़, ह़क़, ह़क़ है। यक़ीनन **''नमाज़ बे ह़याई और बुरी बातों से मन्अ़ करती है।''** लेकिन क्या वज्ह है कि आज कल बे शुमार नमाज़ियों के अन्दर मां बाप की ना फ़रमानी, बे पर्दगी, उ़र्यानी, गाली गलोच, ग़ीबत, चुग़ली और फ़ोह़ूश गोई, दिल आज़ारी, लोगों की ह़क़ तलफ़ी, सूद व रिश्वत के लेन देन वग़ैरा वग़ैरा गुनाहों की कसरत है ! क्या ह़क़ीक़ी नमाज़ी झूटा, दग़ाबाज़, चुग़ल ख़ोर, रिज़्क़े ह़राम कमाने और खाने खिलाने वाला, फ़िल्मों ड्रामों का शैदाई, म्यूज़ीकल प्रोग्रामों और गाने बाजों का शौक़ीन नीज़ दाढ़ी मुंडाने या एक मुठ्ठी से घटाने वाला हो सकता है ? नहीं..... कभी नहीं..... हरगिज़ नहीं। बेशक ह़क़ीक़त येही है कि **नमाज़** बुराइयों से रोकती है। अफ़्सोस ! हमारी अपनी नमाज़ों में कमज़ोरियां हैं, जिन के सबब हम नेक नहीं बन पा रहे, लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम अपनी **नमाज़** का जाएज़ा लें, **नमाज़** के ज़ाहिरी व बात़िनी आदाब सीखें और अपना वुज़ू व ग़ुस्ल वग़ैरा भी दुरुस्त कर लें। अगर सह़ीह़ मा'नों में बा वुज़ू बा त़हारत ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ के साथ इस के तमाम तर ज़ाहिरी व बात़िनी आदाब को ध्यान में रख कर हम **नमाज़** पढ़ेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه ज़रूर इस की बरकतें ज़ाहिर होंगी और दुरुस्त पढ़ी जाने वाली **नमाज़** की बरकत से वाक़ेई गुनाहों की ज़ाहिरी व बात़िनी गन्दगियां दूर हो जाएंगी और हम नेक सूरत, नेक सीरत मुसल्मान बन जाएंगे और हमारा पूरा किरदार सुन्नतों का आईना दार बन जाएगा, اِنْ شَآءَاللّٰه।

सहीह़ नमाज़ ही बुराइयों से बचाती है

जो इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें सहीह़ त़रीक़े पर नमाज़ अदा करते हैं **अल्लाह** करीम उन्हें ज़रूर बुराइयों से बचाता है। चुनान्चे दो ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते ह़सन बसरी और ह़ज़रते क़तादा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِمَا ने फ़रमाया कि जिस शख़्स को उस की नमाज़ बुरे कामों और फ़ोह़्श (या'नी बे ह़याई की) बातों से बाज़ न रखे वोह **नमाज़** उस के लिये वबाल है अलबत्ता जो शख़्स पांचों वक़्त की **नमाज़** इस त़रह़ अदा करता है कि उस की शराइत़ व अरकान व अह़काम, सुन्नतें और दुआएं पूरे त़ौर पर बजा लाए तो **अल्लाह** पाक ऐसे शख़्स को ज़रूर फ़ोह़्श बातों (या'नी बे ह़याइयों) और गुनाहों के कामों से बचाएगा। (تفسیر خازن، 3/452 ملخصا)

नमाज़ दुरुस्त न पढ़ने से मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीसे मुबारका

रुकूअ़ व सुजूद सहीह़ अदा करो !

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه रिवायत करते हैं कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : इन्सान साठ (60) बरस तक **नमाज़** पढ़ता रहता है लेकिन उस की कोई **नमाज़** बारगाहे इलाही में मक़्बूल नहीं होती क्यूं कि वोह शख़्स रुकूअ़ और सज्दे पूरे त़ौर से अदा नहीं करता।

(الترغیب والترہیب، 1/240، حدیث:757)

नमाज़ की बा'ज़ ग़लति़यों की निशान देही

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : (लोग) नमाज़ में (इस त़रह़) सज्दा करते हैं कि पाउं की उंग्लियों के (सिर्फ़) सिरे ज़मीन पर लगते हैं ह़ालां कि हुक्म है कि पेट (या'नी उंगली का वोह ह़िस्सा जो चलने में ज़मीन पर लगता है) लगे, एक उंगली का पेट लगना फ़र्ज़ और हर पाउं की

अक्सर (मसलन तीन तीन) उंग्लियों का पेट ज़मीन पर जमा होना वाजिब है। (फ़तावा रज़विय्या, 3/253 मुलख़्ख़सन) (और दसों का पेट लग कर उंग्लियों का क़िब्ला रू होना सुन्नत है) सिर्फ़ नाक की नोक पर सज्दा करते हैं ह़ालां कि हुक्म है कि जहां तक हड्डी का सख़्त ह़िस्सा है, लगना चाहिये। उ़मूमन देखा जाता है कि रुकूअ़ से ज़रा सर उठाया और सज्दे की त़रफ़ चले गए, सज्दे से एक बालिश्त सर उठाया या बहुत हुवा ज़रा (मज़ीद) उठा लिया और वहीं दूसरा सज्दा हो गया ! ह़ालां कि (रुकूअ़ के बा'द) पूरा सीधा खड़ा होना और (दो सज्दों के दरमियान कम अज़ कम एक سُبْحٰنَ اللّٰه कहने की मिक़्दार पूरा) बैठना चाहिये। इस त़रह़ अगर 60 बरस नमाज़ पढ़ेगा क़बूल न होगी। एक शख़्स मस्जिदे अक़्दस में ह़ाज़िर हुए और बहुत तेज़ी से जल्दी जल्दी **नमाज़** पढ़ी, बा'दे **नमाज़** ह़ाज़िर हो कर सलाम अ़र्ज़ किया। फ़रमाया وَعَلَيْكَ السَّلَام، اِرْجِعْ فَصَلِّ فَاِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ (या'नी) "वापस जा फिर पढ़ कि तू ने **नमाज़** न पढ़ी।" उन्हों ने दोबारा वैसे ही पढ़ी, फिर येही इर्शाद हुवा। आख़िर में उन्हों ने अ़र्ज़ की : क़सम उस की जिस ने हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को ह़क़ के साथ भेजा, मुझे ऐसी ही आती है, हुज़ूर फ़रमाएं, (किस त़रह़ पढ़ूं ?) फ़रमाया : रुकूअ़ व सुजूद ब इत्मीनान कर और रुकूअ़ से सीधा खड़ा हो और दोनों सज्दों के दरमियान सीधा बैठ।

(بخاری، 1/268، حدیث:757 ملخصا) (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 291)

किस नमाज़ की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं होती ?

ह़ज़रते त़ल्क़ बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه बयान करते हैं कि मैं ने **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : "**अल्लाह** पाक उस बन्दे की **नमाज़** की त़रफ़ नज़र नहीं फ़रमाता जो रुकूअ़ व सुजूद (या'नी सज्दे)

में अपनी पीठ सीधी नहीं करता।" (معجم کبیر، 8/338، حدیث:8261) रुकूअ़ व सुजूद में पीठ सीधी करने का मत़लब ता'दीले अरकान या'नी रुकूअ़, सुजूद, क़ौमा और जल्सा में कम अज़ कम एक बार "سُبْحٰنَ اللّٰه" कहने की मिक़्दार ठहरना है।

पीठ सीधी न करने वाले की मिसाल

ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बयान करते हैं कि **सरकारे** नामदार, दो जहां के सरदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे ह़ालते रुकूअ़ में क़िराअत करने से मन्अ़ किया और इर्शाद फ़रमाया : ऐ अ़ली ! नमाज़ में पुश्त (या'नी पीठ) सीधी न करने वाले की मिसाल उस ह़ामिला औ़रत की त़रह़ है कि जब बच्चे की पैदाइश का वक़्त क़रीब आए तो ह़म्ल गिरा दे, अब न तो वोह ह़ामिला रहे और न ही बच्चे वाली। (مسند ابو یعلیٰ، 1/166، حدیث:310)

तज़्किरए मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! अभी आप ने जो ह़दीसे पाक सुनी उस के रावी (या'नी बयान करने वाले) **चौथे ख़लीफ़ा,** अमीरुल मुअमिनीन, ह़ज़रते अ़ली बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ हैं, आप की कुन्यत "**अबुल ह़सन**" और "**अबू तुराब**" है। आ़मुल फ़ील[1] के **30** साल बा'द (जब हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उ़म्र शरीफ़ **30** बरस थी) बरोज़ जुमुअ़तुल मुबारक **13 रजबुल मुरज्जब** को पैदा हुए। आप की वालिदए माजिदा ह़ज़रते फ़ातिमा बिन्ते असद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने अपने

1... या'नी जिस साल ना मुराद व ना हन्जार अब्रहा बादशाह हाथियों के लश्कर के हमराह का'बए मुशर्रफ़ा पर ह़म्ला आवर हुवा था। इस वाक़िए़ की तफ़्सील जानने के लिये मक्तबतुल मदीना की किताब "**अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन**" का मुत़ालआ़ कीजिये।

वालिद के नाम पर आप का नाम "**ह़ैदर**" रखा, वालिद ने आप का नाम "**अ़ली**" रखा। हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप को "**असदुल्लाह**" के लक़ब से नवाज़ा, इस के इ़लावा "**मुर्तज़ा** (या'नी चुना हुवा)", "**करार** (या'नी पलट पलट कर ह़म्ले करने वाला)", "**शेरे ख़ुदा**" और "**मौला मुश्किल कुशा**" आप के मश्हूर अल्क़ाबात हैं। आप मक्की मदनी आक़ा, प्यारे प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचाज़ाद भाई हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, 8/412 वग़ैरा मुलख़्ख़सन)

सह़ाबा व अहले बैत عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के फ़ज़ाइल के क्या कहने ! हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : मेरे सह़ाबा सितारों की त़रह़ हैं, इन में से जिस की भी इक़्तिदा करोगे हिदायत पा जाओगे। (مشکوۃ المصابیح، 2/414، حدیث:6018)

शर्ह़े ह़दीस : और दूसरी ह़दीस में अपने अहले बैत को किश्तिये नूह़ फ़रमाया। (مستدرک، 4/132، حدیث:4774) समुन्दर का मुसाफ़िर किश्ती का भी ह़ाजत मन्द होता है और तारों की रहबरी का भी, कि जहाज़ सितारों की रहनुमाई पर ही समुन्दर में चलते हैं। इस त़रह़ उम्मते मुस्लिमा अपनी ईमानी ज़िन्दगी में अहले बैते अत़्हार के भी मोह़ताज हैं और सह़ाबए किबार के भी ह़ाजत मन्द, उम्मत के लिये सह़ाबा की इक़्तिदा में ही इहतिदा या'नी हिदायत है। (मिरआतुल मनाजीह़, 8/345)

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्ह़ाबे हुज़ूर नज्म हैं और नाव है इ़तरत रसूलुल्लाह की

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 153)

मौला अ़ली की शान ब ज़बाने नबिय्ये ग़ैबदान

ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه रिवायत करते हैं कि रसूले

अकरम, रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (मुझ से) इर्शाद फ़रमाया : "तुम में (ह़ज़रते) ईसा (عَلَيْهِ السَّلَام) की मिसाल है, जिन से यहूद ने बुग़्ज़ रखा ह़त्ता कि उन की वालिदए माजिदा (या'नी बीबी मरयम) को तोहमत लगाई और उन से ईसाइयों ने मह़ब्बत की तो उन्हें उस दरजे में पहुंचा दिया जो उन का न था।" फिर ह़ज़रते **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरे बारे में **दो क़िस्म के लोग हलाक होंगे** मेरी मह़ब्बत में इफ़रात़ करने (या'नी ह़द से बढ़ने) वाले मुझे उन सिफ़ात से बढ़ाएंगे जो मुझ में नहीं हैं और बुग़्ज़ रखने वालों का बुग़्ज़ उन्हें इस पर उभारेगा कि मुझे बोहतान लगाएंगे।"

(مسند امام احمد بن حنبل، 1/336، حدیث:1376)

तुम मुझ से हो

नबियों के सुल्त़ान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ह़ज़रते मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के बारे में फ़रमाने फ़ज़ीलत निशान है : "اَنْتَ مِنِّیْ وَاَنَا مِنْكَ या'नी तुम मुझ से हो और मैं तुम से हूं।" (ترمذی، 5/399، حدیث:3736)

अ़ली की ज़ियारत इबादत है

ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है : हुज़ूर सय्यिदे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अ़ली (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه) को देखना इबादत है।"

(مستدرک، 4/118، حدیث:4737)

"अ़ली" के तीन ह़ुरूफ़ की निस्बत से मौला अ़ली के मज़ीद 3 फ़ज़ाइल

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه इर्शाद फ़रमाते हैं : ह़ज़रते अ़ली बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه को **3 ऐसी फ़ज़ीलतें ह़ासिल हैं** कि अगर उन में से एक भी मुझे नसीब हो जाती तो वोह मेरे

नज़्दीक सुर्ख़ ऊंटों से भी महबूब तर होती। सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم ने पूछा : वोह **3** फ़ज़ाइल कौन से हैं ? फ़रमाया : ﴿1﴾ **अल्लाह** के प्यारे हबीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी साहिब ज़ादी हज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا को इन के निकाह में दिया ﴿2﴾ इन की रिहाइश **अल्लाह** पाक के रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मस्जिदे नबवी शरीफ़ में थी और इन के लिये मस्जिद में वोह कुछ हलाल था जो इन्हीं का हिस्सा है। और ﴿3﴾ ग़ज़्वए ख़ैबर में इन को परचमे इस्लाम अता फ़रमाया गया।

(مستدرک،4/94،حدیث:4689)

वफ़ात शरीफ़

17 या **19** रमज़ानुल मुबारक सिन 40 हिजरी को एक ख़बीस ख़ारिजी के क़ातिलाना हम्ले से शदीद ज़ख़्मी हो गए और **21** रमज़ान शरीफ़ इतवार की रात जामे शहादत नोश फ़रमा गए। (اسد الغابۃ،4/128۔ معرفۃ الصحابۃ،1/100 وغیرہ) **अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

(मज़ीद मा'लूमात के लिये सगे मदीना की 95 सफ़हात की किताब "करामाते शेरे ख़ुदा" पढ़िये)

अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा हैं कि इन से ख़ुश हबीबे किब्रिया हैं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

नमाज़ का चोर

हज़रते अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "लोगों में बद तरीन **चोर** वोह है जो अपनी **नमाज़** में चोरी करे।" अर्ज़ की गई : "**या रसूलल्लाह**

صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! नमाज़ में चोरी कैसे होती है ?" फ़रमाया : "(इस तरह कि) रुकूअ़ और सज्दे पूरे न करे।" (مسند امام احمد بن حنبل، 8/386، حدیث:22705)

चोर की दो क़िस्में

हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा माल के चोर से **नमाज़ का चोर** बदतर (या'नी ज़ियादा बुरा) है, क्यूं कि माल का चोर अगर सज़ा भी पाता है तो (चोरी के माल से) कुछ न कुछ नफ़्अ़ भी उठा लेता है मगर **नमाज़ का चोर** सज़ा पूरी पाएगा, उस के लिये नफ़्अ़ की कोई सूरत नहीं। माल का चोर बन्दे का ह़क़ मारता है जब कि **नमाज़ का चोर, अल्लाह** पाक का ह़क़। येह ह़ालत उन की है जो **नमाज़** को नाक़िस (ख़ामियों भरी) पढ़ते हैं, इस से वोह लोग दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करें जो सिरे से **नमाज़** पढ़ते ही नहीं।

(मिरआतुल मनाजीह़, 2/78 मुलख़्ख़सन)

कौन सी नमाज़ मुंह पर मार दी जाती है ?

ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बयान करते हैं कि दो जहां के सरदार, मक्के मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : हर नमाज़ी के दाएं बाएं (राइट लेफ़्ट-Right and left) एक एक फ़िरिश्ता होता है, अगर नमाज़ी पूरे तौ़र पर **नमाज़** अदा करता है तो वोह दोनों फ़िरिश्ते उस की **नमाज़** ऊपर ले जाते हैं और **अगर ठीक त़रीक़े से अदा नहीं करता तो वोह उस की नमाज़ उस के मुंह पर मार देते हैं।** (الترغیب والترہیب، 1/241، حدیث:724)

सिर्फ़ पूरी नमाज़ क़बूल होती है

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बयान करते हैं : एक दिन मैं **अल्लाह** पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर था, आप

صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने सह़ाबा से (एक सुतून की त़रफ़ इशारा कर के) इर्शाद फ़रमाया : "अगर तुम में से किसी का येह सुतून होता तो वोह इस के ऐबदार होने को ज़रूर ना पसन्द करता, फिर कैसे तुम में से कोई जान बूझ कर **अल्लाह** पाक के लिये पढ़ी जाने वाली **नमाज़** नाक़िस (या'नी ऐबदार) पढ़ता है ! **नमाज़** पूरी किया करो क्यूं कि **अल्लाह** पाक कामिल (या'नी पूरी) **नमाज़** ही क़बूल फ़रमाता है।" (معجم اوسط، 4/374، حدیث:6296)

रिज़्क़ में तंगी का ख़त़रा

शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ "**बिहिश्त की कुन्जियां**" सफ़ह़ा 72 पर फ़रमाते हैं : **नमाज़** को निहायत ही इख़्लास व इत्मीनान और ह़ुज़ूरे क़ल्ब (या'नी दिली तवज्जोह) के साथ अदा करना चाहिये, नमाज़ में जल्द बाज़ी, ग़फ़्लत और बे तवज्जोही से दुन्या व आख़िरत दोनों का अ़ज़ीम नुक़्सान है। चुनान्चे ह़ज़रते इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के दादा उस्ताद ह़ज़रते इब्राहीम नख़ई رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का इर्शाद है कि जिस शख़्स को तुम देखो कि रुकूअ़ और सज्दों को पूरे त़ौर पर अदा नहीं करता है तो उस के अहलो इ़याल (या'नी बाल बच्चों) पर रह़्म करो ! क्यूं कि उन की रोज़ी तंग हो जाने और फ़ाक़ा कशी (या'नी खाने पीने को न मिलने) का ख़त़रा है। (روح البیان، 1/33) एक ह़दीस में है कि ह़ज़रते ह़ुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने एक शख़्स को देखा कि वोह रुकूअ़ व सुजूद (या'नी रुकूअ़ और सज्दों) को पूरे त़ौर पर अदा नहीं करता था तो आप ने फ़रमाया कि तू ने **नमाज़** नहीं पढ़ी और अगर तू इसी ह़ालत में मर जाता तो ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत पर तेरी मौत न होती।

(بخاری، 1/154، حدیث:389) (बिहिश्त की कुन्जियां, स. 72)

नमाज़ी की इस्लाह़ हो ही गई (हि़कायत)

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मन्कूल है कि अन्सार का एक नौ जवान जो पांच वक़्त की **नमाज़** बा जमाअ़त सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ पढ़ता था मगर उस की अ़मली ह़ालत अच्छी न थी, ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इस शख़्स की **नमाज़** कभी न कभी ज़रूर इसे गुनाहों से बाज़ रखे (या'नी दूर कर दे)गी। चुनान्चे ऐसा ही हुवा, थोड़े ही दिनों के बा'द उस ने तमाम बुरी बातों से तौबा कर ली और उस की ह़ालत अच्छी हो गई। (تفسیر خازن، 3/452)

चोर भी अगर सह़ीह़ नमाज़ पढ़े तो सुधर सकता है

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया गया कि फ़ुलां शख़्स रात को **नमाज़** पढ़ता है और सुब्ह़ को चोरी करता है! आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अ़न्क़रीब नमाज़ उसे बुरे अ़मल से रोक देगी। (مسند امام احمد بن حنبل، 3/457، حدیث:9785)

नमाज़ की नक़्ल करने वाले डाकू गिरिफ़्तारी से बच गए

कहा जाता है : एक मरतबा डाकूओं की एक टीम किसी मालदार आदमी के मकान में डाका डालने की ग़रज़ से जा घुसी, इत्तिफ़ाक़न मालदार आदमी की आंख खुल गई, उस ने शोर मचा दिया, अहले मह़ल्ला जाग पड़े और डाकू घबरा कर भाग पड़े, मह़ल्ले वालों ने उन का पीछा किया, डाकू आगे आगे भाग रहे थे, और पीछे पीछे लोग आ रहे थे। रास्ते में डाकूओं को एक मस्जिद नज़र आई, फ़ौरन मस्जिद में दाख़िल हो गए, और झूटमूट **नमाज़** पढ़ने लगे! लोग भी उन को तलाश करते हुए मस्जिद तक आए, देखा कि चन्द आदमी **नमाज़** में मसरूफ़ हैं, इन के इ़लावा

मस्जिद में कोई नहीं, कहने लगे कि अफ़्सोस ! डाकू कहीं निकल गए। चुनान्चे वोह लोग नाकाम वापस लौट गए। येह देख कर डाकूओं का सरदार अपने डाकू साथियों से बोला : अगर आज हम झूटमूट **नमाज़** की सूरत न बनाते तो ज़रूर पकड़ लिये जाते, सिर्फ़ झूटमूट **नमाज़** की सूरत इख़्तियार करने की येह बरकत है कि हम ज़िल्लतो रुस्वाई से बच गए, अगर हम ह़क़ीक़त में **नमाज़** को दुरुस्त तौ़र पर अपना लें तो **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** हमें दोज़ख़ की मुसीबत से भी बचा लेगा, इस लिये मैं तो आज से लूटमार से तौबा करता हूं और **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी की आ़दत छोड़ता हूं। उस के साथी कहने लगे : ऐ हमारे सरदार ! जब आप ने तौबा कर ली तो फिर हम भी क्यूं पीछे रहें ! हम भी आप के साथ तौबा में शरीक हो जाते हैं। चुनान्चे तमाम डाकूओं ने सच्चे दिल से तौबा की, और उन का शुमार परहेज़ गार लोगों में होने लगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

एक आ़शिक़े मजाज़ी की अ़जीबो ग़रीब ह़िकायत

''**नमाज़** बुराइयों से बचाती है'' के बारे में ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान सफ़्फ़ौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने ''नुज़्हतुल मजालिस'' में एक अ़जीबो ग़रीब ह़िकायत बयान फ़रमाई है जिस का ख़ुलासा येह है कि एक शख़्स किसी औ़रत पर आ़शिक़ हो गया आख़िर कार हिम्मत कर के उस ने एक चिठ्ठी में उस औ़रत पर अपने इ़श्क़ का इ़ज़्हार कर दिया। वोह ख़ातून निहायत शरीफ़ ख़ानदान से तअ़ल्लुक़ रखती थी, चिठ्ठी पा कर परेशान हो गई चूंकि शादी शुदा भी थी, कुछ सोच समझ कर वोह चिठ्ठी अपने शौहरे नामदार की ख़िदमत में पेश कर दी। उस का शौहर एक मस्जिद का इमाम था और निहायत परहेज़

गार होने के साथ साथ काफ़ी समझदार भी था, उसे अपनी ज़ौजा पर पूरा ए'तिमाद (या'नी भरोसा) था। लिहाज़ा उस चिट्ठी के जवाब में अपनी ज़ौजा ही की मा'रिफ़त उस ने येह जवाब दिलवाया कि "फ़ुलां मस्जिद में फ़ुलां इमाम के पीछे बिला नाग़ा चालीस (40) दिन **पांचों नमाज़ें** बा जमाअ़त अदा करो, फिर आगे देखा जाएगा।" उस "आ़शिक़" ने पाबन्दी से नमाज़े बा जमाअ़त शुरूअ़ कर दी। जूं जूं दिन गुज़रते गए **नमाज़** की बरकतें उस पर ज़ाहिर होती चली गईं। जब चालीस (40) दिन गुज़र गए तो उस के दिल की दुन्या ही बदल चुकी थी चुनान्चे उस ने येह पैग़ाम भेज दिया : (मोह़तरमा ! नमाज़ की बरकत से मेरी आंख खुल गई है, मैं مَعَاذَاللہ ह़राम कारी के ख़्वाब देखता था लेकिन **अल्लाह** करीम का करोड़हा करोड़ शुक्र कि उस ने मुझे तेरी मह़ब्बत से छुटकारा इनायत फ़रमा दिया है। (اَلْحَمْدُلِلّٰہ) मैं ने अपनी बद निय्यती से तौबा कर ली है और तुझ से भी मुआ़फ़ी का त़लब गार हूं। जब उस नेक ख़ातून ने अपने शौहर को येह पैग़ाम सुनाया तो उस की ज़बान से बे साख़्ता (या'नी एक दम) येह जारी हो गया : صَدَقَ اللّٰہُ الْعَظِیْمُ فِیْ قَوْلِہٖ (या'नी रब्बे अ़ज़ीम ने अपने इस इर्शाद में बिल्कुल सच फ़रमाया) : ﴿اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ﴾ (پ21، العنکبوت:45) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक नमाज़ मन्अ़ करती है बे ह़याई और बुरी बात से। (نزہۃ المجالس، 1/140 ملخصا)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ऐ नमाज़ की बरकतों के त़लब गारो ! देखा आप ने ? नमाज़ की बरकत से एक "आ़शिक़े मजाज़ी" राहे रास्त पर आ गया और उस के दिल में मालिके ह़क़ीक़ी का इ़श्क़ मौजें मारने लगा और उसे सुकूने क़ल्ब

हासिल हो गया । और वाक़ेई **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे हबीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत ही ऐसी है कि जिस खुश नसीब को नसीब हो जाए वोह फिर किसी और से दिल लगा ही नहीं सकता ।

महब्बत में अपनी गुमा या इलाही ! न पाऊं मैं अपना पता या इलाही
रहूं मस्तो बेख़ुद मैं तेरी विला में पिला जाम ऐसा पिला या इलाही

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 105)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

शैतान रोने लगा (हिकायत)

मन्क़ूल है : जब नमाज़ फ़र्ज़ हुई तो शैतान रोने लगा । उस के शागिर्द जम्अ हो गए और रोने धोने की वज्ह पूछी । उस ने बताया : "**अल्लाह** पाक ने मुसल्मानों पर **नमाज़** फ़र्ज़ कर दी है ।" चेलों (या'नी शागिर्दों) ने कहा : तो क्या हुवा ? शैतान ने जवाब दिया : "मुसल्मान नमाज़ें पढ़ेंगे और इन की बरकत से गुनाहों से बच जाएंगे ।" चेलों ने कहा : हमारे लिये क्या हुक्म है ? जवाब दिया : "जब कोई नमाज़ के लिये खड़ा हो तो उस को एक कहे : दाईं (या'नी Right) तरफ़ देख ! दूसरा कहे : बाईं (या'नी Left) तरफ़ देख ! इस तरह उस को उलझा (या'नी कन्फ़्यूज़ कर) डालो ।"

(نزہۃ المجالس، 1/154)

या अल्लाह ! हमें पक्का नमाज़ी बना

ऐ आशिक़ाने नमाज़ ! देखा आप ने ! नमाज़ी से शैतान किस क़दर परेशान है ! वोह जानता है कि अगर कोई मुसल्मान दुरुस्त तरीक़े से **नमाज़** पढ़ेगा तो वोह गुनाहों से बचेगा और मेरे हाथ से निकल जाएगा ! शैतान मरदूद हरगिज़ नहीं चाहता कि हम **नमाज़** पढ़ें, गुनाहों से बचें और

जन्नत की राह लें। हमें शैत़ान का हर वार नाकाम बनाते हुए ख़ूब ख़ूब नमाज़ें पढ़नी चाहिएं। **अल्लाह** पाक हम सब को पक्का नमाज़ी बनाए।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़त़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 102)

दा'वते इस्लामी में कैसे आया ?

नफ़्सो शैत़ान की शरारतों से ख़ुद को बचाने, गुनाहों की आ़दतों से पीछा छुड़ाने और नमाज़ की पाबन्दी की सआ़दत पाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता रहिये। एक "मदनी बहार" सुनिये और झूमिये : एक नौ जवान इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल में आने से पहले गुनाहों भरी ज़िन्दगी बसर कर रहे थे। अ़लाक़े के आवारा गर्द और शराबी नौ जवानों के साथ इन का उठना बैठना था, आवारा दोस्तों ने مَعَاذَاللہ इन्हें भी शराब नोशी और दीगर गुनाहों का आ़दी बना दिया था। इन के शबो रोज़ बेहूदगियों की नज़्र हो रहे थे। शराबी दोस्तों की मंडलियों में शराब के जाम पिये जाते, हंसी मज़ाक़ के फ़व्वारे बुलन्द होते, रात गए शराब के नशे में धुत इस ह़ालत में घर का रुख़ करते कि शराब की बदबू मुंह से आ रही होती, लड़खड़ाते क़दमों से जब घर में दाख़िल होते तो इन की ह़ालत देख कर सब परेशान हो जाते, वालिद साहिब या घर का कोई फ़र्द समझाता तो आपे से बाहर हो जाते, गाली गलोच, चीख़ पुकार करते और समझाने वाले को ख़ात़िर में न लाते। सोह़बते बद की वज्ह से अख़्लाक़ो किरदार भी बहुत ख़राब थे, इन के पास अस्लह़ा होता, जिस से लोगों को डराते और उन पर अपना रो'ब जमाते, मा'मूली बातों पर अहले

अ़लाक़ा से लड़ाई झगड़ा करना, मारधाड़ पर उतर आना इन का मा'मूल बन चुका था, इन की रोज़ रोज़ की शर अंगेज़ियों से जहां घर वाले परेशान थे वहीं अहले अ़लाक़ा भी बेज़ार थे, लोग इन की आ़दाते बद से ख़ाइफ़ (या'नी डरते) थे, जब येह घर से बाहर निकलते तो लोग इन से पनाह मांगते और अपनी औलाद को भी इन के साए से दूर रहने की ताकीद करते। اَلْحَمْدُلِلّٰه इन के फूफीज़ाद भाई को दा'वते इस्लामी का दीनी माहोल मुयस्सर था, उन की ख़्वाहिश थी कि येह शराबी दोस्तों की सोह़बत से बच कर दा'वते इस्लामी के मुश्कबार दीनी माहोल से मुन्सलिक हो जाएं, इसी मक़्सद के तह़्त वोह वक़्तन फ़ वक़्तन इन पर इन्फ़िरादी कोशिश करते। आख़िर कार मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी की मेह़नत रंग लाई और येह आ़शिक़ाने रसूल के हमराह मदनी क़ाफ़िले में सफ़र पर रवाना हो गए, मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी ने दौराने मदनी क़ाफ़िला भी इन पर इन्फ़िरादी कोशिश की, बुराई के नुक़्सानात से आगाह किया और सोह़बते बद छोड़ कर सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने का दीनी ज़ेह्न दिया। मज़ीद सुन्नतों भरे बयानात सुनने की बरकत से इन की ज़िन्दगी में दीनी इन्क़िलाब बरपा हो गया चुनान्चे इन्हों ने गुनाहों भरी सोह़बत को छोड़ कर आ़शिक़ाने रसूल से रिश्ता जोड़ लिया, जिस की बरकत से इ़मामे शरीफ़ का ताज सजा लिया, चेहरा सुन्नते रसूल से रोशन कर लिया, जूं जूं वक़्त गुज़रता गया इन की बुरी आ़दात रुख़्सत होती गईं और येह अच्छे अख़्लाक़ो किरदार से आरास्ता हो गए, पहले लड़ाई झगड़े किया करते थे मगर अब मह़ब्बत व प्यार से मिलते, तरग़ीब दिलाने पर इन्हों ने 63 दिन के दीनी कोर्स की सआ़दत ह़ासिल की और दीनी कामों में ह़िस्सा लेने लगे, और नेकी की दा'वत आ़म

करना इन का मा'मूल बन गया, अच्छे आ'माल से इन की ख़ाली ज़िन्दगी दीनी माहोल की बरकत से अ़मल के ख़ुशनुमा फूलों से मुअ़त्तरो मुअ़म्बर हो गई, दीनी माहोल से पहले नमाज़ों का होश तक न था मगर अब नमाज़ों की पाबन्दी करने के साथ साथ फ़ज्र की नमाज़ के लिये सदाए मदीना (दा'वते इस्लामी की इस्तिलाह़ में नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने को सदाए मदीना कहते हैं) लगाना इन का मा'मूल बन गया।

जो गुनाहों के मरज़ से तंग है बेज़ार है क़ाफ़िला अ़त्तार उस के वासिते तय्यार है

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 635)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

नमाज़ का ख़ूब ख़याल रखो

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते क़तादा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का क़ौल है : **नमाज़** का ख़ूब ध्यान रखो कि वोह अहले ईमान का एक बेहतरीन वस्फ़ (या'नी उ़म्दा ख़ूबी) है। (تفسیر درمنثور، 8/284)

कमज़ोरों के सदक़े रह़मत ही रह़मत

"**रूहुल बयान**" में है कि **अल्लाह** पाक इन (या'नी नेक बन्दों) के इख़्लास, इन की **नमाज़ों** और इन की दुआ़ओं और इन के कमज़ोर व नातुवां अफ़राद के तुफ़ैल लोगों से अ़ज़ाब दूर फ़रमा देता है। (تفسیر روح البیان، 5/445)

नेक बन्दों के सदक़े बलाएं दूर होती हैं

ऐ आ़शिक़ाने नमाज़ ! سُبْحٰنَ الله ! **अल्लाह** पाक अपने नेक बन्दों के तुफ़ैल लोगों से आफ़ात व अ़ज़ाबात दूर करता है। इस सिल्सिले में पांच **फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनिये और मह़ब्बते औलिया में झूमिये :

﴾1﴿ मेरी उम्मत में चालीस मर्द हमेशा रहेंगे, उन के दिल इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के दिल पर होंगे, **अल्लाह** पाक उन के सबब ज़मीन वालों से बला दफ़्अ़ करेगा, उन का लक़ब "अब्दाल" होगा। (حلیۃ الاولیاء، 4/190، رقم:5216)

﴾2﴿ 40 अब्दाल की बरकत से बारिश हुई

अब्दाल (मुल्के) शाम में होंगे, वोह ह़ज़रात चालीस मर्द हैं, जब उन में एक वफ़ात पाता है तो **अल्लाह** पाक उस की जगह दूसरे को बदल देता है, उन की बरकत से बारिशें बरसती हैं, उन के ज़रीए दुश्मनों पर फ़त्ह़ ह़ासिल होती है और उन की बरकत से मुल्के शाम वालों से अ़ज़ाब दूर होता है।

(مسند امام احمد بن حنبل، 1/338، حدیث:896) (मुल्के शाम को अब **सूरया** भी कहते हैं)

"अब्दाल" के मा'ना

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : इस फ़रमाने आ़ली से मा'लूम हुवा कि औलियाउल्लाह का वसीला बरह़क़ है। **अल्लाह** अच्छों के सदक़े बुरों की मुश्किलें ह़ल कर देता है और उन से मुसीबतें टाल देता है। ख़याल रहे कि जिन चालीस वलियों का यहां ज़िक्र है उन्हें **अब्दाल** कहते हैं क्यूं कि उन के मक़ामात, उन की जगह बदलती रहती है कभी मशरिक़ (East) में कभी मग़रिब (West) में कभी जुनूब (South) में कभी शुमाल (North) में मगर उन का हेड क्वॉर्टर (मुल्के) शाम है। (मिरआतुल मनाजीह़, 8/584)

﴾3﴿ मैं जब अ़ज़ाब देने का इरादा करता हूं

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : **अल्लाह** पाक फ़रमाता है : मैं ज़मीन वालों को अ़ज़ाब देने का इरादा करता हूं, तो मसाजिद को आबाद करने

और मेरे लिये आपस में महब्बत रखने और सहरी के वक़्त इस्तिग़फ़ार करने वालों की वज्ह से अ़ज़ाब उन (जिन को अ़ज़ाब देने का इरादा करता हूं) से फेर देता हूं। (شعب الایمان، 6/500، حدیث:9051)

﴾4﴿ दूध पीते बच्चे भी अ़ज़ाब दूर रहने का सबब हैं

अगर नमाज़ी बन्दे और दूध पीते बच्चे और चौपाए न होते तो बेशक तुम पर अ़ज़ाब उतरता। (شعب الایمان، 7/155، حدیث:9820)

﴾5﴿ सो घरों से बलाएं दूर

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** पाक एक सालेह़ (या'नी नेक) मुसल्मान की बरकत से उस के पड़ोस के सो घर वालों की बला (या'नी आफ़त) दफ़्अ़ फ़रमाता है।" (معجم اوسط، 3/129، حدیث:4080) سُبْحٰنَ اللہ ! नेकों का क़ुर्ब भी फ़ाएदा पहुंचाता है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 87)

नेक बन्दों से हमें तो प्यार है اِنْ شَآءَاللہ *अपना बेड़ा पार है*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

जन्नती गुलाब से पैदा की गई हूरें

ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जन्नत में जन्नती गुलाब से पैदा की गई हूरें हैं। किसी ने पूछा : वहां कौन लोग रहेंगे ? फ़रमाया : **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है : वोह लोग जो गुनाहों का इरादा करें लेकिन मेरी अ़ज़मत को याद कर के मेरा लिह़ाज़ करें और जिन की कमरें मेरे ख़ौफ़ से झुक गई हैं वोह जन्नते अ़दन में रहेंगे। मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं ज़मीन वालों को अ़ज़ाब देने का इरादा करता हूं लेकिन उन लोगों को देखता हूं जो मेरी रिज़ा की ख़ातिर भूके प्यासे रहते (या'नी रोज़े रखते) हैं तो लोगों से अ़ज़ाब को फेर देता हूं। (احیاء العلوم، 5/325 ملخصا)

फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ :

पांचों नमाज़ें पाबन्दी से पढ़ने की आ़दत बनाने का अस्ल वज़ीफ़ा येह "एह़सास" है कि नमाज़ मेरे रब ने मुझ पर फ़र्ज़ की है।

(मदनी मुज़ाकरा 20 ज़ुल क़ा'दितल ह़राम 1441 हि., 11 जूलाई 2020)